19 मार्च 2025 को प्रस्तावित विद्या आश्रम न्यास समिति की बैठक के लिए

विद्या आश्रम

वर्ष 2024-25 के प्रमुख कार्य और 2025-26 का प्रस्तावित कार्यक्रम

पिछले वर्ष विद्या आश्रम के कार्यक्रमों में लोकविद्या जन आन्दोलन, विद्या आश्रम से शोध कार्यक्रम, बहुजन ज्ञान संवाद और प्रकाशन के मुद्दे तय किये गए थे. (देखें संलग्न वर्ष 2024-25 की ट्रस्ट बैठक में प्रस्तुत कार्यक्रम का पत्रक). इनमें से कुछ कार्यक्रमों ने आकार लिया जैसे लोजआ के तहत वाराणसी ज्ञान पंचायत के कार्य और इंदौर से 'समाज सृजन के कला मार्ग' की दिशा में कलाकारों के साथ ज्ञान वार्ता और मालवा-निमाड़ क्षेत्र में ज्ञान-यात्राओं का आयोजन (देखें, संलग्न लक्ष्मण प्रसाद और संजीव कीर्तने द्वारा लिखी रपटें). विद्या आश्रम पर कार्यकर्ताओं और शहर के सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ 'बहुजन ज्ञान संवाद' को चलाने के विविध पक्षों पर वार्ताएं हुई और एक शोध कार्य की रूपरेखा बनाई गई, जो वर्ष 2025-26 में विस्तार लेगा.

आश्रम से लोकविद्या वार्ता के व्हाट्सएप्प ग्रुप पर कुछ महत्वपूर्ण वार्ताएं चलीं जिनमें मुख्य रूप से 'बहुजन ज्ञान संवाद' नाम से होने वाले शोध कार्य के उद्देश्य, विचार, विधि आदि पर बात हुई. इसके आलावा कृत्रिम बुद्धि के विविध पक्ष और समाज (विशेष रूप से लोकविद्या समाज) पर होने वाले प्रभाव, सिविलिज़ेशन स्टेट के विचार और सामान्य जीवन पर प्रभाव, वित्तीय पूँजी-राजनीति-नई तकनीकी के गठबंधन का निरंकुश तेज़ी से बढ़ता फैलाव और सामान्य जीवन पर विनाशकारी प्रभाव प्रमुख थे और इससे मोर्चा लेने के लिए 'बौद्धिक सत्याग्रह' को एक प्रमुख कार्यक्रम बनाने का आग्रह रखा गया.

इस वर्ष विद्या आश्रम की वेब साईट का नवीनीकरण हुआ. इसके अलावा शिवमोग्गा के कुवेम्पु विश्वविद्यालय में लोकविद्या (Knowledge in Society) पर तीन दिवसीय संवाद हुआ, जिसके लिए विद्या आश्रम के कई सदस्यों ने लेख लिखे और संवाद में भाग लिया. (देखें https://www.ppstindia.in/convention)

इस क्रम में विद्या आश्रम वर्ष 2025-26 के लिए प्रस्तावित कार्यक्रम की रूपरेखा अगले पृष्ठ पर दी जा रही है.

विद्या आश्रम वर्ष 2025-26 के कार्यक्रम

1. लोकविद्या जन आन्दोलन :

(क) <u>बौद्धिक सत्याग्रह</u> - बौद्धिक सत्याग्रह ज्ञान की दुनिया में साइंस और संगठित ज्ञान (जैसे विश्वविद्यालय, धार्मिक मठ, इन्टरनेट व कृत्रिम बुद्धि) के एकाधिकार से मुकाबले का एक विनम्र मार्ग है. इसके तहत तीन कार्यक्रम लिए जायेंगे.

- <u>बहुजन ज्ञान संवाद</u>: इसके तहत बहुजन समाज के दर्शन, लोकस्मृति, कला-शिल्प, उत्पादन, जीवन संगठन आदि के नैतिक और शक्ति स्रोतों पर संवाद किया जायेगा. इस संवाद से बौद्धिक सत्याग्रह के रचनात्मक प्रकार को आकार दिया जायेगा.
- <u>लोकनीति संवाद</u>: लोकनीति यह लोक के हित में नीतियों पर चर्चा का कार्यक्रम है. यह संवाद के स्थान और भागीदारों के अनुसार स्थानीय, प्रांतीय, राष्ट्रीय, अन्तराष्ट्रीय आदि हर स्तर की नीतियों पर संवाद की क्रिया को चलाने का कार्यक्रम है.
- <u>समाज सृजन के कला मार्ग</u>: कला दर्शन और कला प्रस्तुति के द्वारा उजागर हो रहे सामाजिक मूल्यों, विचारों और दृष्टिकोणों को नैतिक और बराबरी के समाज संगठन की बुनियाद के रूप में देखने, समझने और पहल के प्रयास हैं .

इन तीनों कार्यक्रमों को चलाने में निम्नलिखित मुद्दों का सहारा लिया जायेगा.

- ज्ञान के क्षेत्र में श्रेणीबद्धता यानि ऊँच-नीच को अस्वीकार करना.
- ज्ञान के किसी एक प्रकार को सबसे बढ़िया न मानना.
- ज्ञान के किसी एक स्थान(जैसे विश्वविद्यालय) को सबसे अधिक महत्व न देना.
- ज्ञान के निर्माण के किसी एक तरीके को सबसे सही न मानना.
- ज्ञान के निजीकरण का विरोध करना.
- ज्ञान के संगठन के विविध तरीके अपनाना.
- मायावी (virtual) दुनिया की सीमाओं को पहचानना और उजागर करना.
- लोकविद्या को विद्या का सम्मान देना.
- लोकविद्या की सामाजिक प्रतिष्ठा के लिये कार्य करना.
- लोकविद्या-धारक समाजों के प्रति सम्मान की दृष्टि रखना.
- शिक्षा में लोकविद्या के समावेश के तरीके विकसित करना.
- कला को केवल मनोरंजन का साधन बनाने का विरोध करना.
- ज्ञान के शोषण की व्यवस्थाओं को उजागर करना और इस शोषण के विरोध के संघर्षों में शामिल होना.
- व्यापार और बाजार के मार्फत किसानों और कारीगरों की विद्या के शोषण का विरोध करना.
- लोकविद्या-धारक समाज अपनी विद्या का इस्तेमाल बिना रोकटोक कर सके इसकी हिमायत करना.

(ख) <u>ज्ञान पंचायत</u>

- वाराणसी ज्ञान पंचायत के तहत निम्नलिखित दो कार्यक्रम जारी रहेंगे.
  - -वार्ड ज्ञान पंचायत का गठन
  - -सुर साधना का प्रकाशन
- स्वराज ज्ञान पंचायत का आयोजन- एक बड़ी स्वराज ज्ञान पंचायत का आयोजन कर आज की दुनिया में स्वराज के स्वरुप को समझने का प्रयास होगा.

(ग) <u>जन आन्दोलनों और सामाजिक हलचलों के ज्ञान आधार पर संवाद</u>

2. बहुजन विमर्श (शोध कार्यक्रम) :

यह शोध कार्यक्रम बहुजन-समाज की उज्जवल परम्पराओं की खोज है, जो हमें एक नये समकालीन राजनैतिक चिंतन की ओर ले जाये. सामान्य जीवन की परंपरा को बहुजन की परंपरा कहने से जो सामान्य है वह राजनीतिक हो उठता है. इसकी कुछ समानता महिला आन्दोलन के 'पर्सनल इज़ पोलिटिकल' के नारे के साथ देखी जा सकती है. इस स्थापना से भी की जा सकती है कि यह देश अपने गांवों और बस्तियों में बसता है. सामान्य जीवन के राजनीतिक होने का अर्थ है उस समाज की कल्पना, जिसमें अभिजात्य हो ही नहीं.

बहुजन विमर्श के कुछ प्रमुख बिंदु नीचे दिए जा रहे हैं -

- सामान्य जीवन की परंपरा बहुजन-समाज की जीवन परंपरा है. यह स्थापित करने के लिए किसी तर्क की ज़रूरत नहीं है. यह लगभग पारिभाषिक है. बहुजन कहा ही उसे गया है, जो सामान्य है, अभिजात्य नहीं. हांलाकि खुलकर पर यह बात कहने का आशय यह है कि सामान्य जीवन को एक जीवन परंपरा के रूप में समझा जाये. 'सामान्य जीवन' एक असैद्धांतिकबुनियादी श्रेणी है. असैद्धांतिक इस अर्थ में कि इसकी कोई शर्त नहीं है. किसी भी सिद्धांत, धर्म, तकनीकी, समाज व्यवस्था आदि में इसके रूप और सार की कोई शर्त नहीं होती तथापि वह इन सबसे प्रभावित होता है. यह जीवन की वह परंपरा है जिसमें जीवन के किसी भी पक्ष (राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, ज्ञान, दार्शनिक इत्यादि) में कोई ऊपर का अथवा सत्तायुक्त आयाम बनने की न कोई प्रक्रिया होती है और न कोई चेष्टा. सहयोग की इसमें बड़ी और केन्द्रीय भूमिका होती है, प्रतिस्पर्धा की नहीं.
- लोकविद्या की परम्परा बहुजन-समाज की ज्ञान परम्परा है.
- स्वराज की परंपरा बहुजन-समाज की राज परंपरा है.
- संत परम्परा बहुजन-समाज की परंपरा है.
- स्वदेशी दर्शन बहुजन-समाज का दर्शन है.
- पंचायत की परंपरा बहुजन समाज द्वारा समाज के संगठन, संयोजन एवं नियमन (कानून एवं व्यवस्था) की परंपरा है. इसे इस देश के विधि-विधान की मौलिक परंपरा के रूप में देखा जा सकता है.
- समाज के वित्तीय संगठन, उत्पादन और लेन-देन की परम्पराएँ बहुजन-समाज में प्रचलित वितरित व्यवस्थाओं के विचारों के अनुकूल रही हैं.

- इन सभी बिंदुओं को आपस में गूंथना ही यह शोध है. कहा जा सकता है कि इस गूंथने का सक्रिय गतिशील रूप एक बहुजन ज्ञान संवाद है .

ये इस शोध की पूर्व मान्यताएं (हाइपोथिसिस) हैं. शोध की बनावट और उसका विस्तार इस दृष्टि से किया जाएगा कि इन मान्यताओं अथवा इस समझ के विभिन्न बिन्दुओं पर प्रकाश पड़े. वे कितने सही हैं और कितने गलत, तथा उनका सार व स्वरुप क्या है, यह कई कोणों से सामने आए. बहुजन विमर्श बहुजन संवाद को चलाने का ठोस आधार देगा.

इस वर्ष तीन महीनों के लिए तीन युवाओं को इंटर्नशिप की व्यवस्था होगी.

3. **दर्शन अखाड़ा :** लोकविद्या दर्शन, कला दर्शन और जीवन दर्शन ये बहुजन समाज के लिए अलग-अलग नहीं हैं. विविध ज्ञान दर्शनों में संवाद के मार्फ़त उस चिंतन को सक्रिय करने की कोशिश है, जो आज बहुजन समाज की सक्रियता के दर्शन का आधार बने.

4. **ऑनलाइन उपस्थिति :** वेब साईट, सोशल मीडिया आदि पर उपस्थिति बढ़ाने की ज़रूरत है. और उपरोक्त सभी कार्यक्रमों को ऑनलाइन चलाने के बारे में सोचना होगा.

5. **प्रकाशन :** वर्ष 2025-26 में दो पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया जाना चाहिए. एक ‘बहुजन विमर्श’ से निकले विचारों के संकलन के आधार पर और दूसरी राष्ट्र सत्ता, वैश्विक सत्ता, सभ्यतागत सत्ता और स्वराज के ज्ञान आधारों की तुलनात्मक व्याख्या.

●